पच्चीसवीं कहानी.

तब बैताल बोला ऐ राजा! दक्षन दिसा में धर्मपुर नगर है. वहां के राजा का नाम महाबल. एक समैं, उसी देस का एक और राजा फ़ौज ले चढ़ आया, और उस का नगर आन घेरा. कितने एक दिनों लड़ता रहा. जब सैना इस की मिल गई और कुछ कट गई, तब लाचार हो, रात के वक्त, रानी को बेटी समेत साथ ले, जंगल में निकल गया. जब कई एक कोस बन में पहुंचा तो प्रभात हुआ. और एक गांव नज़र आया. तब रानी और राजकन्या को एक पेड़ तले बिठला, आप गांव की तरफ़ खाने का कुछ सामान लेने चला था, कि इस में भीलों ने आन घेरा, और कहा हथयार डाल दे.

यह सुनके राजा ने तीर मारना शुरूअ किया; और उधर से उन्हों ने. इस तरह एक पहर लड़ाई रही. और कितने एक लोग भीलों के मारे गए. इतने में, एक तीर राजा के कपाल में ऐसा लगा कि वह भैरा कर गिर पड़ा. और एक ने आ राजा का सिर काट लिया. जब रानी और राजकन्या ने राजा को मुआ देखा, तो रोती पीटती उलटी बन को चली. इसी तरह से कोस दो एक चल, मांदी होके बैठीं, और अनेक अनेक भांति की चिंता करने लगीं.

इस में चंद्रसेन(१) नाम राजा और उस का बेटा, दोनों शिकार खेलते हुए उसी जंगल में आ निकले; और दोनों के पांव के चिन्ह देख राजा ने अपने पुत्र से कहा, कि इस महाबन में आदमी के पांव के निशान कहां से आये. राजपुत्र ने कहा महाराज! ये चरन चिन्ह स्त्री के हैं; पुरुष का पांव ऐसा छोटा नहीं होता. राजा ने कहा सच; ऐसा कोमल चरन पुरुष का नहीं होता. फिर राजपुत्र ने कहा इसी समैं गई हैं. राजा ने कहा कि चलो इस बन में ढूंढें जो मिलें तो जिस का यह बड़ा पांव है सो तुझे दूंगा; और दूसरी मैं लूंगा. इस तरह से आपस में बचन बंद हो, आगे जा देखें तो दोनों बैठी हुई हैं. उन्हें देख, खुश हो, मुवाफ़िक़ क़रार के अपने अपने घोड़े पर बैठा घर ले आये. रानी को राजकंवर ने रक्खा; और राजकन्या को राजा ने.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! उन दोनों के लड़कों का आपस में क्या नाता होगा? यह सुन राजा अज्ञान हो चुप रहा.

फिर बैताल खुश हो बोला कि ऐ राजा! मैं तेरा धीरज और साहस देख अति प्रसन्न हुआ. पर एक बात मैं तुझ से कहता हूं, सो तू सुन; कि जिस के शरीर के रोम समान कांटों के, और देह काठ सी, और नाम शांतशील, सो तेरे नगर में आया है. और तुझे उन ने मेरे लाने को भेजा है; आप बैठा मरघट में मंच जगा

(१) चन्द्रसेन.

रहा है; और तुझे मारा चाहता है. इस लिये मैं जता देता हूं, कि जब वह पूजाकर चुकेगा तब तुझ से कहेगा कि ऐ राजा! तू साष्टांग दंडवत कर. तब तू कहियो कि मैं सब राजाओं का राजा हूं. और सब राजा आनके मुझे दंडवत करते हैं. मैं ने आज तक किसू को दंडवत नहीं की; और मैं नहीं जानता. आप गुरू हैं; मुझे कृपा कर सिखा दीजिये तो मैं करूं. जब वह दंडवत करे, तब ऐसा खड्ग मारियो कि सिर जुदा हो जाय. तद तू अखंड राज करेगा. और जो यह तू न करेगा तो वह तुझे मार अचल राज करेगा.

इतनी बात राजा को चिता, बैताल उस मुर्दे के कालिब से निकलकर चला गया. और कुछ रात रहते वह मुरदा ला, राजा ने जोगी के आगे रख दिया. जोगी ने उस को देखकर खुश हो राजा की बहुत सी बड़ाई की. फिर मंत्र पढ़ उस मुर्दे को जगा, होमकर बल दिया. और दक्षिण की तरफ़ बैठ, जितना कुछ वहां सरंजाम तैयार किया था, सो अपने देवता को चढ़ा दिया. और पान, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य दे पूजाकर राजा से कहा कि तू दंडवत कर, तेरा बड़ा तेज प्रताप होगा, और अष्ट सिद्धि सदा तेरे घर में रहेगी.

यह सुन, राजा ने बैताल की बात याद कर, हाथ जोड़ निपट आधीनता से कहा कि महाराज! मैं प्रणाम कर नहीं जानता. पर आप गुरू हैं, जो कृपा करके सिखाइये तो मैं करूं. यह सुन योगी ने जौंहीं दंडवत

करने को सिर झुकाया, औंहीं राजा ने एक खड्ग मारा कि सिर जुदा हो गया. और बैताल ने आन, फूलों का मेह बरसाया. ऐसा कहा है, कि जो अपने तईं मारा चाहे उस के मारने से अधरम नहीं.

उस समैं राजा का साहस देख, इंदर(१) समेत सब देवता अपने अपने विमानों पर बैठ वहां जै जै कार करने लगे. और राजा इंदर ने प्रसन्न हो राजा बीर बिक्रमाजीत से कहा कि बर मांग. तब राजा ने हाथ जोड़ कर कहा महाराज! यह कथा मेरी संसार में प्रसिद्ध हो. इंदर ने कहा कि जब तक चांद, सूरज, पृथवी, आकाश स्थिर है तब तक यह कथा प्रसिद्ध रहेगी. और तू सर्व भूमि का राजा होगा.

इतना कह राजा इंदर अपने स्थान को गया. और राजा ने उन दोनों लोथों को ले, उस तेल के कड़ाह में डाल दिया. तब यह दोनों बीर आ हाज़िर हुए; और कहने लगे कि हमें क्या आज्ञा है? राजा ने कहा जब मैं याद करूं, तब तुम आना. इस तरह से उन से बचन ले, राजा अपने घर आ, राज करने लगा. ऐसा कहा है, कि पंडित हो, या मूर्ख, लड़का हो, या जवान, जो बुद्धिवान होगा उसी की जै होगी.

---

(१) इन्द्र.

संपूर्ण.

ग़लत़नामः.

ग़लत.	सहीह़.	सफ़ह़ः.	सतर.
ओर	ऋौर	६	१०
कल पर क्या,	कल पर क्या	१६	१५
पह्ंचा	पऊंचा	१६	१९
उट	उठ	२८	७
सीखी	सीखे	२८	१३
बेाला	बेाली	४८	७
राजों	राजाओं	४९	२३
पुछेा	पूछेा	५१	७
रक्षबीज	रक्तबीज	५५	५
मऋलूम	मऋलूम	५६	१२
पकड़ा	कपड़ा	६०	१३
पह्ंचा	पहुंचा	७८	१६
बियाह	बिवाह	९३	१३
इघर	इधर	९६	२२
की	किया	१०४	२४
यह	वह	१२६	२२
दे	ले	१२७	१९
पुरेाहिब	पुरेाहित	१३१	१५
पातालँ	या पाताल	१३२	५
यह	वे	१४१	१५